संकुल स्रोत केन्द्रों में मासिक बैठक हेतु

द्वितीय वर्ष

चर्चा पत्र - नवम्बर, 2016

अंक –6

गुमनामी के अंधेरे में था, पहचान बना दिया।
दुनिया के ज्ञान से मुझे, ज्ञानी बना दिया।
उनकी ऐसी कृपा हुई, गुरू ने मुझे एक अच्छा,
इंसान बना दिया।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान

स्वच्छ भारत अभियान
एक कदम स्वच्छता की ओर

राज्य परियोजना कार्यालय
राजीव गांधी शिक्षा मिशन
रायपुर, छ.ग.

आमुख

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के द्वितीय वर्ष के प्रथम अकादमिक निरीक्षण के बाद आप सभी अपने संकुल की शालाओं में आगामी निरीक्षण के पूर्व सुधार की तैयारी कर रहे होंगे | हम यह मानकर चल रहे हैं कि जो शालाएं "ए" एवं "बी" ग्रेड में आए हैं, वे स्वयं ही अपने आपको बेहतर स्थिति में बनाए रखने अपनी तैयारी कर रहे होंगे | इस वर्ष की फोकस शालाएं अपने सभी कक्षाओं में बच्चों को दस दक्षताओं में सुधार के लिए मेहनत कर रहे होंगे | जिन संकुलों ने नियमित रूप से मासिक बैठकों का आयोजन कर अकादमिक चर्चाएँ प्रारंभ की हैं और अपने शाला प्रबन्धन समितियों विशेषकर माताओं को जागरूक किया है, उन शालाओं में गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष शालाओं में अपेक्षाकृत सुधार हुआ है | इस अभियान के अंतर्गत गत वर्ष शाला, इस वर्ष कक्षा एवं अगले वर्ष प्रत्येक बच्चे का आंकलन किया जाना है | अतः यदि बच्चों के साथ नियमित मेहनत नहीं की गयी तो अगले वर्ष की कसौटी में खरा उतरना मुश्किल होगा | इसलिए अभी से योजनाबद्ध तरीकों से मेहनत अति आवश्यक होगी |

इस माह लगभग सौ से अधिक संकुल समन्वयकों से सीधे संवाद का अवसर प्राप्त हुआ | विकट परिस्थितियों में भी लगभग साठ प्रतिशत से अधिक संकुल समन्वयक अच्छा काम कर रहे हैं | राज्य स्तर से आप पर पूरा भरोसा करते हुए ही हमने आपके संकुलों के भीतर की शालाओं में गुणवत्ता सुधार की महती जिम्मेदारी सौंपी है | इस विश्वास का आधार आपकी कड़ी मेहनत, अनुभव एवं कुछ कर गुजरने एवं प्रभाव बढाने की ललक है जो आप सबमे दिखाई देती है | हम सबको पूरा विश्वास है कि आप अपने अपने संकुलों में शिक्षा गुणवत्ता के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे | फिनलैंड को दुनिया में शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अग्रणी देश के रूप में जाना जाता है | वहां आपको पूरे देश में किसी कोने में गन्दगी नही दिखाई देगी | सभी को यह मालूम है कि लोग भरोसा नहीं तोड़ेंगे और लोग एक दूसरे पर पूरा भरोसा करते हैं | चाहे वह भोर सुबह चार बजे सुनसान सड़क पर लाल बत्ती देखने पर रूकने की बात हो या फिर होटल में एक कप चाय के पैसे देकर एकांत में कंटेनर से जितना चाहो उतना चाय लेने की सुविधा हो | कोई निर्धारित व्यवस्था को तोड़ने की नहीं सोचता | जो बच्चे अन्य की तुलना में पिछड़े हुए हैं, उन बच्चों को सीखने में सहयोग करना शिक्षक अपना कर्तव्य मानते हैं | क्या हम भी मिलजुलकर ऐसा वातावरण नहीं बना सकते ? क्या हम भी मेहनत कर अपने राज्य में शिक्षा गुणवत्ता को नहीं सुधार सकते ? क्या हम सब मिलकर उन बच्चों को जो काम-काज छोड़कर कुछ बनने की लालसा लिए हमारी सरकारी शालाओं में आते हैं, उन्हें अच्छी शिक्षा नहीं दे सकते ? आप सबसे आग्रह है कि कुछ सोचें और इस दिशा में कुछ सार्थक पहल करें |

आप सभी ने अपने जिला एवं जनपद पंचायतों में मुख्य कार्यपालन अधिकारी को देखा होगा | शासन की विभिन्न योजनाओं को जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन की समस्त जिम्मेदारी इन पर होती है | बड़ी-बड़ी कंपनियां अपना पूरा कारोबार एक सी.ई.ओ. के भरोसे में ही करती हैं | आप अपने संकुल के लिए मुख्य कार्यपालन अधिकारी की भूमिका में हैं | **अपने आपको डाकिया कहना और कहलाना छोड़ दें** | छोड़ से यह सोचना कि आप केवल विभिन्न विभागों का डाक बाँटने का काम कर रहे हैं | आपके नाम के साथ समन्वयक जुडा हुआ है | सकारात्मक सोचते हुए इन अवसरों को अपने विभाग, अपनी शालाओं की दशा और दिशा सुधारने में लेवें, उनसे समन्वय स्थापित करें | आप जिन विभागों के लिए काम करते हैं उनसे किस प्रकार अपने विभाग, अपनी शालाओं के लिए कुछ सहयोग ले सकते हैं, यह खोजने का प्रयास करें | किन-किन स्त्रोतों से शालाओं में उपलब्ध सुविधाओं का विस्तार किया जा सकता है, बच्चों की गुणवत्ता सुधारने में इन विभागों, अधिकारियों का कैसे सहयोग लिया जा सकता है, इस पर विचार करना शुरू करें |

अपने सहयोगियों, उच्च अधिकारियों, संकुल के शिक्षकों, समुदाय, जनप्रतिनिधियों के साथ तालमेल बिठाकर आगे बढ़ने के लिए आपको प्रबन्धन के आधुनिक तकनीकों को भी जानना होगा | अपने आपको स्व-अध्ययन के माध्यम से अद्यतन रखना होगा और अपने शिक्षकों को भी सतत क्षमता विकास के लिए प्रेरित करना होगा | आगे आने वाले माह आपके लिए चुनौती भरे होंगे | आपको अपना प्रभाव दिखाना होगा | आप सभी इस बात से सहमत होंगे कि बच्चों में दक्षताएं एक दिन में नहीं आती और पुरानी मूलभूत दक्षता न हो तो आगे आने वाली नई दक्षताएं ग्रहण नहीं की जा सकती | ये सब एक दूसरे से जुडी और गुंथी होती है | अब बोर्ड परीक्षाएं प्रारंभ होंगी और हमारे संकुल के सभी बच्चों को बोर्ड परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन करने के लायक और सामर्थ्यवान बनाना है | मेहनत करें !

राज्य के कोने-कोने में शिक्षा की अलख जगाने वाले मेरी टीम के सभी सदस्यों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं !

एजेंडा एक: माताओं का उन्मुखीकरण-

माह नवंबर के लिए आपके संकुल की शालाओं के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण कार्य होगा | आपको अपने संकुल की सभी शालाओं में माताओं का उन्मुखीकरण आपके स्वयं की देखरेख एवं उपस्थिति में करवाना होगा | इस कार्यक्रम के माध्यम से आपको सुनिश्चित करना होगा कि आपके संकुल की शालाओं में महिलाओं का एक ऐसा दल है जो –

- बच्चों को रोज स्कूल भेजने में विश्वास रखता है और भेजता है |
- शाला में शिक्षकों की उपस्थिति से लेकर पढाई की खोज-खबर लेता है |
- घर पर बच्चों को नियमित रूप से समय पर पढ़ने की व्यवस्था एवं घर पर पढाई सुनिश्चित करता है |
- बच्चों की कापी पुस्तक देखकर उसको स्कूल में क्या पढ़ाया इसके बारे में जानने का प्रयास करता है |
- शाला में शिक्षकों से नियमित मिलकर अपने बच्चों की पढाई की स्थिति की जानकारी लेता है |
- पीछे छूट रहे बच्चों के लिए स्थानीय स्तर पर उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करता है |

शाला स्तर पर इस प्रशिक्षण के आयोजन के लिए स्थानीय स्तर पर बेहतर विकल्पों का चुनाव करें | उन्मुखीकरण में सुविधादाता के रूप में आप सर्वप्रथम शाला प्रबन्धन समिति के महिला सदस्य, निर्वाचित महिला जन-प्रतिनिधि, महिला प्रेरक, महिला आंगनबाडी कार्यकर्ता, मितानिन, स्थानीय महिला जिसका क्षेत्र में वर्चस्व हो और लोग उनकी बात का आदर करते हों, मानते हों, का चयन कर सकते हैं | प्रशिक्षण के आयोजन हेतु सुझावात्मक विषयवस्तु इस प्रकार है:

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अतंर्गत बच्चों की शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु शाला स्तर पर माताओं को जागरूक किया जाना अत्यंत आवश्यक है। हम यहाँ माताओं के उन्मुखीकरण के लिए कुछ सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं। अपने संकुल की सभी शालाओं में शिक्षकों के माध्यम से किसी एक दिन का निर्धारण कर शाला में आने वाले सभी बच्चों की माताओं को शाला में आमंत्रित कर उनका उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन कर आवश्यक रूप से संपन्न कर सूचित करें।

शाला से माताओं को सतत् रूप से जोड़ने हेतु आवश्यक व्यवस्थाएं करें। इस सामग्री के आधार पर कार्यक्रम तय करें। यह कार्य माह नवंबर, 2016 में अनिवार्यतः संपन्न करवाए।

माताओं का उन्मुखीकरण क्यों ?

1. शाला के अलावा बच्चों का सबसे ज्यादा समय अपनी माताओं के साथ बीतता है।
2. माताएं अपने बच्चों को उनकी पढ़ाई के प्रति जागरूक रख सकती हैं।
3. माताओं के सहयोग से बच्चों की उपलब्धि में सुधार हो सकता है।
4. माताओं के सक्रिय रहने से शिक्षकों का कार्य हल्का हो जाता है।

माताओं को शाला में कैसे आमंत्रित करें ?

1. माताओं को पूरे आदर के साथ आमंत्रित किया जाए।
2. पूरे कार्यक्रम के दौरान माताओं के समूह को सम्मान एवं पूरा आदर दें।
3. माताओं को बच्चों के माध्यम से बैठक सह उन्मुखीकरण की सूचना भिजवाएं।
4. बैठक में सभी माताओं की उपस्थिति सुनिश्चित करने विद्यार्थियों को जिम्मेदारी दें।

कार्यक्रम का आयोजन कहाँ हो ?

1. कार्यक्रम यथासंभव शाला परिसर में ही हो।
2. बैठने एवं चर्चा के लिए उचित वातावरण हो।

3. माताओं को उनके बच्चों की कक्षा एवं बैठने के स्थान को दिखलाएं।
4. प्रांगण एवं शौचालय आदि साफ–सुथरे रहने चाहिए, बच्चों के बैठने हेतु पर्याप्त स्थल।
5. बच्चों के माध्यम से उनकी माताओं से पूछकर उचित समय का चयन करें।
6. इसका ध्यान रखें, कामकाजी माताओं की रोजी या काम का नुकसान हो।

. **इस अवसर पर बच्चों की ओर से क्या-क्या प्रस्तुति हो ?**

1. बच्चों को अपनी माताओं की प्रशंसा में कुछ अभिव्यक्ति करने का अवसर देवें।
2. बच्चों को माताओं के प्रति अपनी भावनाओं को कुछ गीतों के माध्यम से प्रस्तुत करने का अवसर दें।
3. कुछ गद्य या पद्य को बच्चों को बारी–बारी से आकर पढ़ने का अवसर देवें।
4. बच्चों को पहाडा गणितीय संक्रियाएं करके दिखाने का अवसर देवें।
5. अंग्रेजी में भी बच्चों को कुछ बोलने के अवसर देवें।

. **माताएं कैसे जान पाएंगी कि उनके बच्चे पढ रहे हैं अथवा नहीं ?**

1. बच्चों की किताबों को पलट कर देखें कि उनमें अभ्यास कार्य किया जा रहा है अथवा नहीं।
2. बच्चों की कापियों को समय समय पर देखें कि बच्चे उसमें कुछ लिख रहे है अथवा नहीं।
3. बच्चों को समय समय पर शाला में क्या सीखा इसकी जानकारी लेते रहें।
4. बच्चों से किसी पुस्तक के किसी अंश को पढ़कर सुनाने को कहें।
5. बच्चों को कोई गणित या पहाड़ा बोलने को कहें।
6. इधर/उधर जाते समय आस–पास होर्डिंग्स या दीवार पर लिखे वाक्यों शब्दों को पढ़कर सुनाने को कहें।

माताएं घर पर पढ़ने का माहौल कैसे बना पाएंगी ?

1. बच्चों को घर पर सीखने के लिए स्थान एवं शांत वातावरण उपलब्ध कराएं।
2. पढ़ाई के समय हल्ला–गुल्ला या तनाव का वातावरण न बनाएं।
3. बच्चों की पठन सामग्री एवं पाठ्य पुस्तकें संभाल कर रखने का स्थान निर्धारित करें।
4. पढ़ने के लिए समुचित प्रकाश की व्यवस्था करें।
5. यदि घर पर समुचित स्थान पर व्यवस्था न हो तो समुदाय के किसी उपयुक्त स्थान में बच्चों को समूह में बैठकर पढ़ने के अवसर उपलब्ध कराएं।
6. बेरोजगार या सेवानिवृत, गांव में पढ़े लिखे युवा या वृद्ध लोगों की पहचान कर उनसे बच्चों की पढ़ाई में सहयोग लें।

बच्चों की आवश्यकताओं/ कुछ आवश्यक सूचनाओं को शिक्षक तक कैसे पहुंचाएंगे ?

1. यदि आपके बच्चे आपकी बात नहीं मान रहे है या पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे रहे हैं तो इसकी जानकारी अपने शिक्षक को अवश्य देवें।
2. जब आपका बच्चा किसी कारणवश शाला नहीं जा पाए तो उसकी सूचना शिक्षक को अवश्य देवें।
3. यदि आपके बच्चे में कोई स्वास्थ्यगत समस्या हो तो उसकी जानकारी अपने शिक्षक को अवश्य देवें।

बच्चों को नियमित शाला जाना आवश्यक है इसके लिए क्या स्थानीय उदाहरण दिया जा सकता है ?

1. एक दिन हम फसल/जानवर को पानी न दे तो उसकी हालत क्या हो जाती है ? एक दिन यदि आपका बच्चा स्कूल न जाए तो कितना नुकसान हो सकता है ? अगले दिन की बात उसे समझ में नहीं आएगी फिर आगे लगातार वैसे ही समस्याएँ आएंगी।

यदि शाला में बच्चों को कोइ विशेष ध्यान नहीं मिल रहा है तो किन से शिकायत कर सकते हैं ?

1. शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों से जिनके नाम शाला की बाहरी दीवार पर लिखें हों ?
2. प्रधानाध्यापक से यदि बच्चों के कार्यों की नियमित जांच नहीं की जा रही है तो संबंधित शिक्षक।
3. यदि शिक्षक समय पर नहीं आते और अपना कार्य ठीक से नहीं कर रहे हैं।
4. यदि बच्चे कक्षानुरूप कुछ नहीं सीख पा रहे हैं तो प्रधानाध्यापक या संकुल समन्वयक से।

आप शाला में शिक्षकों को कैसे सहयोग दे सकते हैं ?

1. माताएं बच्चों को स्कूल छोड़ने आएं तो शिक्षकों से मिलने का प्रयास करें।
2. अपने बच्चों को रोज नियमित स्कूल भेजकर।
3. शिक्षकों से अपने बच्चों की नियमितता एवं प्रगति के बारे में पूछें।
4. समय–समय पर स्वयं कक्षा लेने का प्रयास करें और स्थानीय ज्ञान एवं कौशल के बारे में बताएं।
5. समुदाय से लोगों को पढ़ाई में सहयोग देने हेतु प्रेरित करें।
6. शिक्षकों को उनकी आवश्यकतानुसार सहायक सामग्री निर्माण हेतु सामग्री उपलब्ध कराएं।
7. पुराने अखबार एवं बच्चों की पत्रिकाओं को शाला में उपलब्ध कराएं।

बच्चों से भावनात्मक लगाव कैसे बना सकते हैं ?

1. बच्चों से स्कूल में होने वाली गतिविधियों की जानकारी लें।
2. जानकारी नियमित रूप से लेते रहें खान–पान एवं बच्चों के स्वास्थ्य की।
3. बच्चों से उनके दोस्तों के बारे में भी पूछें।
4. बच्चों को समय–समय पर कहानी सुनाएं और उनसे भी कहानी सुने।
5. बच्चों को बड़े होकर क्या बनना हैं सपना देखने को कहें।
6. बच्चों को हमेशा प्रश्न पूछने विशेषकर क्यों ? वाले प्रश्न अवश्य पूछने को प्रोत्साहित करें।
7. बच्चों से उनके आस–पास के बारे में पूछें एवं चर्चा करें।
8. बच्चों के मन की बात बोलने एवं सुनने का अवसर अवश्य प्रदान करें।

माताएं शाला में क्या क्या देख सकती हैं ?

1. आज क्या पढ़ाई हुई ? शिक्षक रोज आ रहे हैं ? तुमको सब समझ में आ रहा है ?
2. रोज स्कूल जा रहे हो ? आज क्या गृहकार्य मिला ? तुम बड़े होकर क्या बनना चाहते हो ?

3.. कक्षा की पढ़ाई/बच्चे सीख रहे हैं या नहीं वालपेपर/पुस्तकालय का उपयोग/प्रार्थना के समय का उपयोग/शाला में पढ़ाई का माहौल/अनुशासन/मध्याह्न भोजन/स्वच्छता/सहायक शिक्षण सामग्री।

गाँव में माताओं का दल बनाकर उनके माध्यम से क्या क्या किया जा सकता है ?

1. शाला का समय–समय पर अवलोकन/शाला के लिए आवश्यक संसाधन जुटाना/क्षेत्र के ऐसे लोगों की पहचान जो शिक्षा ने सहयोग दे सके।
2. शाला/अवधि के बाद बच्चों के पढ़ाई की व्यवस्था एवं पढ़ने हेतु स्थान/शाला के बेहतर संचालन के लिए आवश्यकता की मांग को लेकर संबंधित के पास जाना।

इस दल को कैसे हमेशा सक्रिय रखा जा सकता है ?

अपने स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर सोचें और कार्यान्वित करें।

बेहतर कार्य कर रही माताओं को कैसे प्रोत्साहित किया जा सकता है ?

स्थानीय सशक्त महिलाओं के उदाहरण दें और इनके द्वारा किए जा रहे अच्छे कार्यों को प्रोत्साहित करने हेतु आवश्यक व्यवस्था करें।

माताओं व्दारा दिए जा सकने योग्य सहयोग के कुछ क्षेत्र

1. बच्चों की नियमित उपस्थिति।
2. शिक्षकों से बच्चों की पढ़ाई के बारे में चर्चा।
3. शाला/कक्षा का सौंदर्यीकरण।
4. कक्षा शिक्षण में सहयोग।
5. रात्रिकालीन कक्षाएँ।
6. स्थानीय संसाधनों से बाऊण्ड्रीवाल निर्माण।
7. मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता में सुधार।
8. बालिकाओं की शिक्षा में जोर।
9. शिक्षकों के लिए आवास सुविधा में सहयोग।
10. बच्चों को स्थानीय कहानियां सुनाना।
11. बच्चों के स्वास्थ्य पर ध्यान देने हेतु उन्मुखीकरण।
12. बच्चों को साफ–सुथरे स्कूल भेजने हेतु व्यवस्था।

एजेंडा दो: बच्चों की नियमित उपस्थिति-

आप सभी इस बात से सहमत होंगे कि जब तक बच्चे नियमित रूप से शाला नहीं आएंगे वे शाला से कुछ नया सीख नहीं पाएंगे | बच्चों का शाला में नियमित आना अत्यंत आवश्यक है | हमारे पास ऐसी कोई नियमित व्यवस्था नहीं है जिससे हमें बच्चों की उपस्थिति के बारे में जानकारी मिल सके | हाल ही में हुए डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान में शाला निरीक्षण के दिन बच्चों की उपस्थिति की जानकारी भी संकलित की गयी थी |

कक्षा	कुल दर्ज संख्या	भ्रमण के दिन उपस्थिति	उपस्थिति का %
पहली	106005	71904	68%
दूसरी	106171	76844	72%
तीसरी	105301	79310	75%
चौथी	103207	79621	77%
पांचवीं	110612	86525	78%
योग	531296	394204	74%
छठवीं	77609	61216	79%
सातवीं	82254	64654	79%
आठवीं	78529	60628	77%
योग	238392	186498	78%

इस टेबल के अनुसार राज्य के प्राथमिक शालाओं में उपस्थिति 74% एवं उच्च प्राथमिक शालाओं में बच्चों की औसत उपस्थिति 78% रही | बच्चों की उपस्थिति का यह स्तर भी उस स्थिति में है जब सभी शालाओं को इस बात की जानकारी थी कि जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उनकी शाला में निरीक्षण के लिए आएंगे | अर्थात अन्य सामान्य अवसरों में यह उपस्थिति और कम हो सकती है |

अब अपनी बैठक कम से कम इन बिन्दुओं पर चर्चा करें –

1. हमारे संकुल की शालाओं में बच्चों की उपस्थिति का प्रतिशत क्या है? यदि यह कम है तो कम उपस्थिति के कारण क्या हैं ?
2. बच्चों की उपस्थिति को बढाने के क्या क्या उपाय हो सकते हैं?
3. सभी शालाओं में अधिकतम उपस्थिति बनाए रखने हेतु लक्ष्य एवं प्रत्येक बच्चे के उपस्थिति की ट्रेकिंग करने के क्या उपाय हो सकते हैं?

एजेंडा तीन: इस माह के लिए गतिविधियाँ -

निम्नलिखित मुद्दों पर **भाषा के प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी** का सहयोग लेकर चर्चा आयोजित कर शिक्षकों के साथ क्रियान्वयन के लिए ठोस रणनीति बनाएं –

बच्चों में लिखने के कौशल विकसित करने हेतु क्या क्या किया जाना चाहिए ?

कक्षा में सभी बच्चों की लेखनी सुन्दर हो, इसके लिए संकुल स्तर से क्या उपाय किए जाएं ?

कई बार शिक्षक भी श्यामपट पर गलत हिन्दी लिख देते हैं |

बच्चों को अपनी कल्पना से स्वतंत्र लेखन के अवसर देने हेतु कुछ मुद्दों का चयन करें जैसे –

- यदि हमारे जीवन में बिजली न हो तो जीवन कैसे बिताएंगे ? कल्पना करके लिखो |
- यदि आपको एक दिन के लिए स्कूल का प्रधानाध्यापक बना दें तो आप क्या क्या करोगे ?
- आपकी पसंद के कुछ सामान/ उत्पाद आदि के लिए विज्ञापन लिखें और उसे प्रस्तुत करें |
- बच्चों के आसपास आमतौर पर बोली जाने वाली मुहावरों एवं पहेलियों को एकत्रित करवाएं |

इन मुद्दों पर **गणित के प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी** का सहयोग लेकर चर्चा आयोजित कर शिक्षकों के साथ क्रियान्वयन के लिए ठोस रणनीति बनाएं –

- बच्चों को स्थानीय मान की अवधारणा सिखाने के लिए आप कितना समय देते हैं ? इस हेतु कौन कौन सी सामग्री एवं गतिविधियों का इस्तेमाल करते हैं ? स्थानीय मान के ठीक से समझ में न आने से बच्चों को क्या-क्या तकलीफें आगे होती हैं ?
- बच्चों को गुणा की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए कक्षा में कैसी गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए ?
- मापन (लंबाई, धारिता, वजन, मुद्रा) के लिए कौन-कौन सी गतिविधियाँ तैयार की जा सकती है ?
- गणित किट का उपयोग कर अथवा अन्य किसी सामग्री के माध्यम से भिन्न की अवधारणाओं को कैसे बेहतर तरीकों से स्पष्ट किया जा सकता है ?
- ज्यामितीय आकृतियों एवं ग्राफ आदि को सरल तरीके से कैसे सिखाया जा सकता है ?

इन मुद्दों पर **विज्ञान के प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी** का सहयोग लेकर चर्चा आयोजित कर शिक्षकों के साथ क्रियान्वयन के लिए ठोस रणनीति बनाएं –

- शिक्षकों के इस माह कराए जा सकने योग्य विभिन्न प्रयोगों के बारे में जानकारी देते हुए उनके सामने उनके साथ मिलकर विभिन्न प्रयोगों को लर्निंग कम्युनिटी के सदस्यों व्दारा स्वयं करके दिखाए जाने की व्यवस्था की जाए |
- बच्चों को अपने आसपास की पत्ती लेकर आने को कहें और अपनी अपनी पत्ती को देखकर निम्नलिखित जानकारियाँ देने को निर्देशित करें-

  यह पत्ती कहाँ से मिली ? इस पत्ती का रंग क्या है ? इस पत्ती का किनारा कैसा है ? इस पत्ती की सतह कैसी है ? यह पत्ती किस पेड़ की हो सकती है ? इस पत्ती का चित्र अपनी कापी में बनाएं | विभिन्न प्रकार की पत्तियों को जमाकर कोई आकार देकर कोलाज बनाएं |

इन मुद्दों पर **सामाजिक अध्ययन के प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी** का सहयोग लेकर चर्चा आयोजित कर शिक्षकों के साथ क्रियान्वयन के लिए ठोस रणनीति बनाएं –

- गत माह त्यौहारों के मौसम होने की वजह से बच्चों के अनुभव के आधार पर आप निम्नलिखित मुद्दों पर अपने शिक्षक साथियों को गतिविधियों के लिए तैयार करवाएं:
  हम त्यौहार क्यों मनाते हैं ? त्यौहारों का क्या महत्व हैं ? आपने अपना त्यौहार कैसे मनाया ? त्यौहारों के दौरान बाजार का क्या हाल होता है ? आपने त्यौहार के दौरान कौन-कौन से पकवान खाए ? आपने घर में त्यौहार की तैयारी के लिए क्या क्या काम किया ? घर में क्या मदद आपने की ? सामाजिक आस्था से जुड़े कुछ त्यौहारों के बारे में बताएं | ऋतुओं से जुड़े कुछ त्यौहारों के बारे में बताएं | फसलों से जुड़े कुछ त्यौहारों के बारे में बताएं | कुछ राष्ट्रीय त्यौहारों के बारे में बताएं |

एजेंडा चार: डिजिटल युग का लाभ लेना शुरू करें-

विद्यालय स्वच्छता पुरस्कार के लिए आनलाइन आवेदन देने के मामले में छत्तीसगढ़ राज्य ने पूरे देश में सबसे बेहतर काम किया | पुरस्कार मिले अथवा ना मिले पर हमारे शिक्षकों ने बढ़-चढ़ कर इस प्रतियोगिता में हिस्सा लिया | यह इस बात को साबित करता है कि हमारे अधिकांश शिक्षकों में अपेक्षाकृत तकनीकी ज्ञान अवश्य है |

अब हम गत वर्ष डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान में ए एवं बी ग्रेड प्राप्त शालाओं में **शाला सिद्धी** नामक कार्यक्रम चलाने जा रहे हैं | इसमें शालाओं को अपना स्व-आंकलन कर पूछी जा रही जानकारी आनलाइन वेबसाईट में भरते हुए सुधार के लिए प्रयास करने होंगे |

छत्तीसगढ़ में एस.सी.ई.आर.टी. व्दारा लिखित कक्षा छः की **विज्ञान की पुस्तक को ईबुक** के रूप में बदल लिया गया है | इस पुस्तक में कक्षा छः की विज्ञान की अवधारणाओं को विभिन्न सरल प्रयोगों एवं वीडियो आदि के माध्यम से समझाया गया है | आप चाहें तो alokshukla.com में जाकर इस पुस्तक को डाउनलोड कर सकते हैं और इसे अपने मोबाइल से भी स्वयं देखकर समझकर और बच्चों को समझाने में भी मदद ले सकते हैं | अगले अंक तक कक्षा सात की पुस्तक को भी ईबुक में बदल लिया जाएगा | इसका लाभ जरूर लेवें और बच्चों को भी डिजिटल युग का अनुभव लेने के अवसर दें | अपने अनुभवों को अवश्य हमारे साथ शेयर करें एवं वेबसाईट में अपना फीडबैक भी दें |

इस बार हमारे राज्य के लिए खुशी की एक और बात है | इस वर्ष के **इग्नाईट अवार्ड** हेतु कुल 28 पुरस्कारों में से तीन हमारे राज्य के बच्चों को मिले हैं | सुकमा के रोशन सोढी ने एक ऐसे वोटिंग मशीन की कल्पना की जिसमे वोट डालने से वोट सीधे कंट्रोल रूम में चला जाए | दंतेवाडा के इंदु मानिकपुरी ने सेप्टिक टेंक के प्रेशर रिकोर्ड स्केल के बारे में उपाय सुझाए | जांजगीर के हिमांशु रतेरिया ने टीवी में एक ऐसा अलार्म सुझाया जो बुजुर्गों को उनके दवा लेने के समय को अलार्म के माध्यम से याद दिला सके | ये सभी बच्चे नवंबर सात को राष्ट्रपति महोदय से राष्ट्रपति भवन में पुरस्कार प्राप्त करेंगे | क्या आपने इस पुरस्कार के लिए आवेदन दिया था ? इसे भी आनलाइन भरा जा सकता है | अगले वर्ष के लिए सोचें और बच्चों को अभी से प्रेरित करें |

सभी संकुल समन्वयकों से अनुरोध है कि वे अपने **मोबाईल में एजुट्रेक एप्प को डाउनलोड करें** और जब शाला जाएं तो शाला की जानकारी मोबाईल एप्प से भेजने की व्यवस्था करें | हम राज्य स्तर से यह देख सकेंगे कि किन संकुलों ने शाला अवलोकन के दौरान शाला परिसर से मोबाईल एप्प का इस्तेमाल कर जानकारी भेजना शुरू कर दिया है | सभी संकुलों में अब टेब का इस्तेमाल कर जानकारी संकलित किए जाने की योजना है | प्रथम चरण में कोरबा एवं कांकेर के ऐसे संकुल समन्वयक जो तकनीकी का उपयोग करने में सक्षम हैं, उन्हें टेब दिया जा रहा है | सीखना शुरू करें !

अधिकांश जिलों में शिक्षकों ने **प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी** बनाकर एक दूसरे से शैक्षिक जानकारियाँ **व्हाटसएप्प के माध्यम से शेयर** की जा रही हैं | रोज उनके व्दारा किए जा रहे प्रयोग, शिक्षण सामग्री का उपयोग,

नवीन शिक्षण विधियों के उपयोग के अनुभव, प्रश्नोत्तरी जैसे अनेकानेक कार्य किए जा रहे हैं | इन व्हाटसएप्प समूहों को केवल शैक्षिक कार्यों एवं आपसी चर्चा के लिए उपयोग में लाया जाना है | आप भी यदि गंभीरतापूर्वक इस मीडिया का इस्तेमाल कर रहे हैं तो अपने समूह को 9425507257 नंबर से भी जोड़ें ताकि हम सब आपके प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के बारे में जान सके |

एजेंडा पांच: इस माह के शिक्षक-

1. **श्रीकांत धर दीवान** – संकुल समन्वयक, कटनई, विकासखंड अकलतरा, जिला जांजगीर –चांपा में कार्यरत

(9826850014) व्दारा माह सितंबर, 2016 में एक ही तिथि सोलह तारीख को अपने संकुल के सभी शालाओं में माताओं का एक सम्मलेन आयोजित किया गया | सम्मलेन में शामिल होने के लिए आमंत्रण बच्चों के माध्यम से भिजवाया गया था और सभी शालाओं में उपस्थिति बढ़िया रही | इस सम्मलेन के दौरान माताओं को बच्चों की शैक्षिक प्रगति, स्वास्थ्य, स्वच्छता मिशन, सामाजिक – राजनैतिक कार्यों में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने विभिन्न कार्यक्रम तय करते हुए बढ़िया चर्चाओं का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया | उन्हें बहुत बहुत बधाई !

2. राजेश सूर्यवंशी, शिक्षक, पूर्व माध्यमिक शाला, अमोदा, विकासखंड नवागढ़, जिला जांजगीर (8120815021)

– इनके व्दारा शाला के सुधार के लिए विगत कई माह से विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किया जा रहा है | समुदाय का विश्वास जीतते हुए उन्होंने बच्चों के लिए पुरस्कार, विज्ञान प्रयोगशाला, कृषि को लोकप्रिय बनाने, मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता पर ध्यान देने, विद्यालय परिसर में सब्जी उगाने एवं उनके देखरेख में सहयोग, विद्यालय को ग्रीन विद्यालय के रूप में विकसित करने में श्रमदान, शैक्षणिक भ्रमण में ले जाने, खेती-किसानी, डाकघर, विभिन्न कारीगरों से कक्षाएं लेने में सहयोग, शाला में विज्ञान प्रसार विपनेट के सहयोग से विज्ञान क्लब की स्थापना जैसे बहुत से महत्वपूर्ण कार्य करवाए गए हैं | इनकी इच्छा है कि वे अपनी शाला में प्रोजेक्टर एवं कम्प्युटर का इंतजाम कर बच्चों को आई सी टी का उपयोग कर बेहतर शिक्षा देने की व्यवस्था कर सकेंगे | इन्होने बच्चों के साथ मिलकर भीषण गर्मी में पौधों को बचाने टपक सिंचाई का नवाचार भी अपने शाला में किया है |

आपके क्षेत्र में जो प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बेहतर कार्य कर रहे हों तो उनके कार्यों की जानकारी ईमेल या पत्र से राज्य परियोजना कार्यालय को उपलब्ध करावें | अपने व्हाटसएप्प ग्रुप में 9425507257 को शामिल करें ताकि आपके समूह के कार्यों से अवगत हुआ जा सके | तिल्दा लाइन अभी भी खुली है | इच्छुक आवेदन करें |

एजेंडा 6: सभी शालाओं में न्यूनतम आवश्यकताएं –

राज्य में प्रारंभिक कक्षाओं में गुणवत्ता बनाए रखने के लिए 2703 संकुल स्त्रोत केंद्र एवं इतने ही संकुल समन्वयक के पद पर वरिष्ठ, कुशल एवं अनुभवी शिक्षक कार्य कर रहे हैं | संकुल स्त्रोत केंद्र इसलिए स्थापित किए गए थे ताकि शालाओं को अकादमिक समर्थन मिल सके | आज आप सभी संकुल समन्वयक अपने आप से ये प्रश्न पूछकर यह पता करने का प्रयास करें कि हम अपनी अपेक्षाओं के विरुद्ध कितने खरे उतर सके हैं-

- *स्त्रोत केंद्र का मतलब है कि हमारे पास शालाओं को अकादमिक समर्थन के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हैं | इतने वर्षों में स्त्रोत केंद्र के रूप में हमने अपने पास कौन कौन से स्त्रोत-संसाधन एकत्रित कर उनका उपयोग शालाओं में किया है ?*
- *हमारा प्रमुख कार्य शिक्षकों की अकादमिक समस्याओं को हल करना है | आज तक हमने कितने, किस प्रकार के और कौन-कौन से अकादमिक समस्याओं को हल किया है ?*

आप सभी से अनुरोध है कि अब आगे अपने आपको डाकिया कहलाना छोड़कर एक कुशल समन्वयक या संकुल के सीईओ के रूप में अपने संकुल के सभी शालाओं में निम्नलिखित कार्यों को बेहतर तरीके से लागू करते हुए संकुल व्यवस्था पर विश्वास को वापस लाएंगे :

1 पढ़े भारत बढे भारत – *प्रिंट रिच वातावरण (50 शब्द कम से कम), वाल मैगजीन, समाचार पत्रों के साथ आने वाली बाल पत्रिकाओं का संकलन, सक्रिय पुस्तकालय, श्रुत लेखन, सुन्दर लेखनी हेतु अभ्यास एवं प्रतियोगिताएं, स्थानीय कहानियों को एकत्रित कर पठन सामग्री एवं कक्षा में नियमित कहानी सुनाने की परंपरा आदिआदि |*

2 राष्ट्रीय आविष्कार अभियान – *गणित किट का नियमित उपयोग, विज्ञान के सरल प्रयोग कक्षा में करते हुए विषय के अवधारणाओं को स्पष्ट करना, बच्चों एवं शिक्षकों को टेक्नोलोजी के उपयोग के लिए परिचित एवं प्रेरित करना, आसपास की घटनाओं के पीछे छिपे वैज्ञानिक कारणों को ढूँढ पाना, अधिक से अधिक ई-सामग्री को ढूंढकर उपयोग कर पाना |*

3 सीखने -सिखाने हेतु अधिकतम समय – *यह सुनिश्चित करना कि शालाएं समय पर लगें, पूरे निर्धारित समय तक लगे, सभी समय पर आएं, सभी नियमित उपस्थित रहते हुए सक्रिय रहें, शिक्षण योजना बनाकर समयबद्ध तरीके से अध्यापन हो, निर्धारित समय में समझ के साथ पाठ्यक्रम पूरा हो, घर पर भी पढाई पर ध्यान देने की व्यवस्था हो |*

4 कक्षागत प्रक्रियाओं में सुधार – *छोटे-छोटे समूह में बच्चों को बिठाकर एक दूसरे को सहयोग कर सीखने की व्यवस्था, शिक्षकों के भी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाकर एक दूसरे से सीखना, संकुल में मासिक बैठकों में चर्चा पत्रों का नियमित उपयोग कर उन्हें लागू कर पाना, एक्टिव लर्निंग पद्धति का उपयोग, आकलन के सरल एवं प्रभावी तरीके |*

5 समुदाय का सक्रिय सहयोग – *सक्रिय शाला प्रबन्धन समिति, शिक्षा में गुणवत्ता के लिए जागरूक समुदाय, माताओं का उन्मुखीकरण कर उन्हें बच्चों के पढाई में ध्यान दिलवाना, समुदाय से शाला में सहयोग से सकने योग्य लोगों की पहचान कर उनसे आवश्यकतानुसार विभिन्न क्षेत्रों यथा शिक्षण आदि में सहयोग लेना, शालाओं में बाल केबिनेट का गठन कर विभिन्न कार्यों में बच्चों से सहयोग एवं जिम्मेदारियां देना |*

एक संकुल समन्वयक के रूप में हम आपसे यह उम्मीद कर रहे हैं कि आप अपने संकुल की सभी शालाओं में इन पांच बिन्दुओं के क्रियान्वयन की दिशा में सतत कार्य करते रहेंगे, सुधार करेंगे |

खुले में शौच से होने वाले नुकसान से आप सभी अच्छी तरह से वाकिफ हैं | पिछले कुछ वर्षों से इस दिशा में एक सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दे रहा है | प्रदेश के विद्यालयों से इस दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है | 19 नवंबर को विश्व शौचालय दिवस मनाया जाता है | गत माह के मन की बात में प्रधानमंत्रीजी ने कबीरधाम जिले में बच्चों व्दारा अपने पालकों को शौचालय हेतु पत्र लिखने का जिक्र किया था | आप भी इस दिन इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु कुछ नया करने का सोचें, करें और हमारे साथ शेयर करें |

एजेंडा 7: बाल संसद-

आपकी शाला के बहुत से कार्यों को आप बच्चों के समूह बनाकर उनके माध्यम से करवा सकते हैं | बच्चों के ऐसे समूह को हम बाल संसद कह सकते हैं | बच्चों को विभिन्न कार्यों की जिम्मेदारियां बचपन से दे देने से एवं उन्हें समूह में कार्य करने के अवसर सुलभ कराने से उनके व्यक्तित्व को निखारने में मदद के अलावा उनके आत्मविश्वास, कुशल प्रशासक के गुण विकसित करने में सहयोग मिलता है | बाल संसद के गठन एवं उनके माध्यम से बहुत से कार्य का एक बेहतर उदाहरण मुंगेली जिले के मुंगेली विकासखंड के पंडरभाटा संकुल के प्राथमिक शाला करही से मिला है |

शाला में बाल संसद या बाल केबिनेट बनाने में निम्नानुसार पद एवं जिम्मेदारियां दिए जाने का सुझाव है:

राष्ट्रपति- विद्यालय के संपूर्ण प्रशासन व्यवस्था का संचालन अपनी जिम्मेदारियों के पूरे ज्ञान के साथ |

प्रधानमंत्री- राष्ट्रपति का सहयोग करते हुए विद्यालय का कुशल संचालन |

गृह मंत्रालय- इस मंत्रालय का कार्य शाला में अनुशासन व्यवस्था, समय पर कक्षा लगना एवं शिक्षकों व्दारा निर्धारित पाठ्यक्रम समय पर पूरा करने में सहयोग करना, लाइन, दरी/टाटपट्टी, शाला दूत जो अनुपस्थित बच्चों को शाला ला सके जैसे कार्य होंगे |

स्वास्थ्य मंत्रालय- प्रतिदिन हाथ धुलाई, शारीरिक साफ़-सफाई, बाल-नाखून, बच्चों का वजन, ऊँचाई का रख-रखाव, प्राथमिक उपचार, सभी कक्षाओं एवं परिसर में डस्टबिन की उपलब्धता जैसे कार्यों की जिम्मेदारियां |

खाद्य मंत्रालय- थाली वितरण, मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता, शाला के आसपास मिलने वाले खाद्य पदार्थों की स्वच्छता, साफ़-सफाई, गुटका, तंबाखू पर रोक, स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता जैसे कार्य |

सुरक्षा मंत्रालय- बाल-सुरक्षा विशेषकर बालिकाओं की सुरक्षा, बच्चों के आपसी विवाद का निपटारा, शाला में आग, सांप-बिच्छुओं एवं अन्य खतरनाक चीजों/ आपदाओं से सुरक्षा हेतु व्यवस्था करना, रैगिंग जैसी किसी घटना को न होने देना |

खेल मंत्रालय- शाला में बच्चों की रूचि अनुसार खेल-उपकरण की उपलब्धता, स्थानीय खेलों को बढ़ावा देना, समुदाय से खेल के लिए सहयोग, नियमित खेल संबंधी गतिविधियों का आयोजन, सामग्री एवं मैदान का रख-रखाव एवं उपलब्ध कराना |

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय- यह समूह अपने क्षेत्र की माताओं को शाला से जोड़ने, उन्हें बच्चों की पढाई में ध्यान देने हेतु प्रेरित करना, अपने नजदीकी आँगनबाड़ियों में पढ़ रहे बच्चों को शाला के लिए तैयार करने में सहयोग करना आदि | इस मंत्रालय के अंतर्गत मीना मंच का गठन भी कर सकते हैं |

सूचना प्रसारण मंत्रालय- शाला में हो रही विभिन्न गतिविधियों, समुदाय से शाला को जोड़ने, शाला के लिए वाल मैगजीन प्रतिमाह तैयार करना, शाला में सूचना पटल की व्यवस्था, बच्चों व्दारा विभिन्न सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्य |

शाला में बच्चों के बीच इस प्रकार के संसद एवं विभिन्न मत्रालयों के कार्यों की जिम्मेदारियां देते हुए ऐसे संसद का गठन करें और इनके सहयोग से शाला के कई महत्वपूर्ण कार्य संपादित कर बच्चों में आत्मविश्वास की भावना लाएं |

यह कार्य सभी विद्यालयों में करवाया जाना सुनिश्चित करें और माह जनवरी में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत होने वाले द्वितीय अकादमिक निरीक्षण के दौरान उनके व्दारा किए जा रहे कार्यों से अवगत कराएं |

कोरबा जिले ने आगामी शाला निरीक्षण के लिए अभी से सभी शालाओं को संभावित प्रश्न भेजते हुए बच्चों के साथ तैयारी प्रारंभ कर दी है | आप अपने संकुल में सुधार के लिए क्या तैयारी कर रहे हैं ?

एजेंडा 8 :चलो लौट चलें अपने बचपन में !

माह नवंबर में बाल दिवस मनाया जाना है | इस बहाने आप भी संकुल की बैठक के दौरान अपना अपना बचपन याद करें | आपको आपके बचपन में गाए जाने वाले कुछ मजेदार गीत यहाँ दिए जा रहे हैं -

आलू-कचालू बेटा कहाँ गये थे, बन्दर की झोपडी मे सो रहे थे। बन्दर ने लात मारी रो रहे थे, मम्मी ने पैसे दिये हंस रहे थे।	मछली जल की रानी है, जीवन उसका पानी है। हाथ लगाओ डर जायेगी बाहर निकालो मर जायेगी।	आज सोमवार है, चूहे को बुखार है। चूहा गया डाक्टर के पास, डाक्टर ने लगायी सुई, चूहा बोला उईईईईई ।
झूठ बोलना पाप है, नदी किनारे सांप है। काली माई आयेगी, तुमको उठा ले जायेगी ।	चन्दा मामा दूर के, पूए पकाये भूर के। आप खाएं थाली मे, मुन्ने को दे प्याली में ।	मोटू सेठ, पलंग पर लेट , गाडी आई, फट गया पेट
तितली रानी बड़ी सयानी, फूल फूल पर जाती है | फूल-फूल से रंग चुराकर, अपने पंख सजाती है | जब उसे जाओ पकड़ने, झट से वो उड़ जाती है ||	पोशम्पा भाई पोशम्पा, सौ रुपये की घडी चुराई । अब तो जेल मे जाना पडेगा, जेल की रोटी खानी पडेगी, जेल का पानी पीना पडेगा।	तितली उड़ी, बस मे चढी । सीट ना मिली, तो रोने लगी। ड्राईवर बोला, आजा मेरे पास, तितली बोली " हट बदमाश"।

सभी प्रतिभागी शिक्षक इन गीतों को किसी कुशल शिक्षक के मार्गदर्शन में गाने का अभ्यास करें और अपनी-अपनी शाला में बच्चों के साथ गाएं और मजा लें | इन गीतों को माह जनवरी में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के आगामी शाला भ्रमण के दौरान बच्चों को पूरे हाव-भाव के साथ गाने का अवसर दें |

एजेंडा 9: जिद करें और जीतें -

जिद

मैं हार गयी हूँ
लेकिन न हारने की
जिद है बाकी
अंदर ही अंदर टूट रही हूँ
लेकिन अभी
हिम्मत है बाकी |

दिल तो मेरा
बस यही कहता है
हार गयी तू
लेकिन मन की
जिद है क्यूं
हिम्मत तो कर
सारा समय है बाकी |

गिरने के डर से
चले ही न
तो चल कब पायेगें
घुटना के बल रहे तो
सर उठा कब पायेगें
इसीलिए हिम्मत तो कर
सारी जिंदगी है |

रायपुर शहर से दूर एक गाँव की एक लडकी जो घर के काम एवं गरीबी की वजह से कक्षा दसवीं में पढाई छोड़ दी और घर पर बैठकर काम के साथ-साथ कविताएँ लिखने लगी | अपनी कविताओं को छपवाने के लिए शहर के चक्कर लगाकर अनुदान लेकर अब तक तीन कविता संग्रह का प्रकाशन कर चुकी हैं | कविताएं लिखने हेतु प्रेरणा के पीछे वह अपने तत्कालीन प्राचार्य परसदा हायर सेकंडरी शाला श्री क्षत्रिय, वर्तमान विकासखंड शिक्षा अधिकारी, धरसीवां, रायपुर को देती है जब उसने प्रार्थना के दौरान उनके प्रेरक वाक्यों को सुना और तभी से उनसे प्रेरणा लेकर कवितायेँ लिखने लगी | इनकी कविताओं को पढ़ने से आश्चर्य होता है कि इतने कम उम्र में इतने अनुभव के निचोड़ को वह अपनी कविताओं में उतार पा रही हैं |

बैठक में समूह में इनकी लिखी एक कविता का मन में अध्ययन कर चिंतन करें एवं सभी प्रतिभागी अपने-अपने अनुभव के दायरे में इस पर चिंतन करते हुए वर्तमान स्थिति से ऊपर उठने की चाहत पैदा करें | आप चाहें तो इस बच्ची से बात कर सकते हैं | इनका नाम कु. मीना जांगडे है और इनका मोबाइल नंबर है- 9981280570

एजेंडा 10: प्रथम अकादमिक निरीक्षण: अब आगे क्या ?

आपके संकुल के फोकस शालाओं में प्रथम अकादमिक निरीक्षण माह सितंबर, 2016 में संपन्न हुआ और अब हमें प्राप्त डाटा का विश्लेषण भी हो चुका है और उसे हमने जिलों के साथ शेयर कर लिया है | हमने जिलों को ऐसे शिक्षकों की सूची भेजी है जिन्हें विभिन्न दक्षताओं में प्रशिक्षण की आवश्यकता है | आपको अपने संकुल में गुणवत्ता सुधार के लिए निम्नलिखित कार्य करने होंगे ताकि न केवल द्वितीय चक्र बल्कि अगले वर्ष भी आपका संकुल बेहतर परिणाम दे सकें –

1. फोकस शालाओं में रिपोर्ट कार्ड की एक प्रति रखी होगी, जिसे बैठक में मंगवाते हुए ऐसे शिक्षकों की सूची बनाकर तैयार रखें जिनकी कक्षाएं प्रथम चक्र में सफल नहीं हो सकी |
2. इन शिक्षकों को विभिन्न विषयों के प्रशिक्षण में भेजने की व्यवस्था रखें ताकि उनका क्षमता विकास हो सके |
3. सभी दस दक्षताओं में बच्चों में सुधार हेतु संकुल की बैठक में चर्चा कर नई गतिविधियाँ सोचें और अभ्यास करें |
4. संकुल की सभी शालाओं के सभी शिक्षकों को इस प्रकार से निरंतर तैयारी करवाएं कि उनके सभी बच्चों में अपेक्षित दक्षताएं हासिल की जा सके | इस हेतु आप स्वयं आपस में मिलकर कोई ठोस कार्यक्रम डिजाइन करें |
5. जिन शालाओं का फोकस शालाओं में चयन नहीं हो पाया है, उन्हें भी साथ लेकर अभ्यास करवाएं |
6. अपने संकुल के विभिन्न प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को सक्रिय करते हुए उन्हें सभी शिक्षकों को विभिन्न विषयों में प्रशिक्षण के लिए तैयार करवाएं और पठन सामग्री भी तैयार करें |
7. अभी से प्रत्येक बच्चे के दक्षता विकास पर ध्यान देने की व्यवस्था रखें | शाला भ्रमण के दौरान बच्चों से प्रश्न पूछें |
8. समुदाय के सदस्यों को भी बच्चों की प्रगति पर ध्यान देने एवं घर पर पढाई में ध्यान देने हेतु माताओं को तैयार करें |
9. शिक्षकों को Time on task पर ध्यान देते हुए अधिक से अधिक समय बच्चों को पढाई में सक्रिय रखने, एक दूसरे से सीखने एवं बच्चों की शंकाओं को दूर करने हेतु सतत ध्यान देने हेतु तैयार करें |
10. सभी बच्चे नियमित रूप से शाला आएं और कोई भी अनुपस्थित न रहे, इस दिशा में कार्य करें |

प्रति वर्ष दिनांक 11 नवंबर को भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद जी की याद में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस का आयोजन किया जाता है | आप भी अपने संकुल में इस दिन को यादगार बनाने इनमे से कुछ कार्यक्रम का आयोजन कर सकते हैं –

- निबन्ध लेखन, वाद-विवाद एवं शिक्षा से जुड़े मुद्दों पर सेमीनारों का आयोजन
- इसी दिन सभी शालाओं में माताओं का उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन
- साक्षरता से जुड़े लोगों के साथ मिलकर शाला में नव-साक्षरों एवं पालकों के साथ कार्यक्रम
- समुदाय एवं बच्चों को कौशल उन्नयन एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की जानकारी
- शाला प्रबन्धन समिति के साथ बैठक कर शाला में शिक्षा गुणवत्ता संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन

अपने क्षेत्र के सक्रिय प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को इस कार्य का दायित्व दिया जा सकता है | राष्ट्रीय शिक्षा दिवस में शिक्षा गुणवत्ता सुधार हेतु किए गए प्रयासों को हमसे साझा करें |

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान- विभिन्न कार्यों की मानिटरिंग हेतु चेक लिस्ट

#	कार्य	शालाओं के नाम									
		शाला एक		शाला दो		शाला तीन		शाला चार		शाला पांच	
		संपन्न	नहीं तो कब तक	संपन्न	नहीं तो कब तक	संपन्न	नहीं तो कब तक	संपन्न	नहीं तो कब तक	संपन्न	नहीं तो कब तक
1	शाला में प्रिंट रिच वातावरण										
2	नियमित वाल मैगजीन प्रकाशन										
3	सक्रिय पुस्तकालय										
4	श्रुत लेखन का कार्य										
5	गणित किट/ सामग्री का उपयोग										
6	मौखिक गणित/ अंग्रेजी हेतु अभ्यास										
7	विज्ञान को प्रयोग से समझाना										
8	शिक्षण योजना निर्माण / उपयोग										
9	सभी की नियमित उपस्थिति										
10	समय पर निर्धारित पाठ्यक्रम पूरा										
11	बच्चों को समूह में शिक्षण										
12	प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी										
13	माताओं की सक्रिय भागीदारी										
14	बाल केबिनेट का गठन										
15	शाला विकास योजना अनुरूप कार्य										
16											
17											

महत्वपूर्ण- शाला विकास योजना

शिक्षा के अधिकार में सभी शालाओं को शाला विकास योजना बनाकर उसके अनुरूप कार्य करने के निर्देश हैं / विभाग में हाल ही में हुए ओडिट में यह तथ्य सामने आया है कि अभी भी कुछ शालाओं में शाला विकास योजना नहीं बनाई जा रही है / आप सभी संकुल समन्वयकों से यह अनुरोध है कि अपने अपने शालाओं में यह सुनिश्चित कर लेवें कि सभी के यहाँ शाला विकास योजना बनाई जाती है और उसके अनुरूप ही शालाओं में विभिन्न कार्य किए जाते हैं / शाला भ्रमण के दौरान या बैठकों में उनकी योजना को लाने के निर्देश देते हुए सभी शालाओं के शाला विकास योजना का ठीक से अवलोकन कर लेवें एवं यदि उनमे गुणवत्ता का बेहतर पुट नहीं होने पर उन्हें समझाते हुए उनके शाला के लिए समुदाय से सुझाव लेते हुए बेहतर एवं प्रभावी विकास योजना बनाने हेतु प्रेरित करें /